सामाजिक विज्ञान की एक कक्षा

महमूद खान

सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु और पढ़ाई का एक मक़सद विद्यार्थियों को समाज में होने वाली घटनाओं की पड़ताल करना सिखाना और सवालों के ज़रिए उनके बारे आलोचनात्मक जागरूकता पैदा करना है। इसी मक़सद से, लेख में सामाजिक विज्ञान की अवधारणा 'समता और समानता' पर काम करने के लिए एक शिक्षण योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, जिसमें गतिविधि-आधारित शिक्षण के लिए आज़माई गई गतिविधियों का दिनवार व उपसमूहवार विवरण शामिल है। इन गतिविधियों में, विद्यार्थियों को किसी पाठ की विषयवस्तु सुनाकर उनके विचारों व निजी अनुभवों को सुनना; गृहकार्य के रूप में विद्यार्थियों को उनके साथ घटी घटनाओं के बारे में लिखवाना; यदि इस बारे में कहीं कुछ पढ़ा हो उसे बताने को कहना; उपसमूहों में विषयवस्तु पढ़कर इनसे जुड़े सवालों के जवाब लेना; विषय से सम्बन्धित वीडियो क्लिप दिखाकर उनपर चर्चा करना; विद्यार्थियों से इस तरह के सवाल पूछना, जो सोचने-समझने के मौक़े बनाएँ और विद्यार्थियों को भी आलोचनात्मक सवाल बनाने के लिए प्रोत्साहित करना; आदि के अनुभव-आधारित ब्योरे शामिल हैं। -सं.

भूमिका

शिक्षकों के साथ सामाजिक विज्ञान विषय में पिछले कई वर्षों से काम करते हुए मैंने अनुभव किया है कि गतिविधि-आधारित शिक्षण की बात शिक्षकों को सही तो लगती है, लेकिन उन्हें यह भी लगता है कि स्कूल की कक्षा में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करना मुश्किल होता है। इसलिए इस तरह से कार्य नहीं करवाया जा सकता। हमारी टीम को लगा कि हम ख़ुद कक्षा में जाकर गतिविधि-आधारित शिक्षण कराएँ। इससे हम शिक्षकों की मुश्किलों को समझ सकेंगे और उनसे इस बारे में कुछ ठोस बात कर पाएँगे। इसी बात को ध्यान में रखकर तय किया कि हम स्कूल में सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाने वाले शिक्षक के साथ मिलकर शिक्षण योजना बनाएँ और बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करें। इस फ़ैसले के आधार पर, मैंने जयपुर शहर के एक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का चुनाव किया और शिक्षक के साथ कक्षा 7 में शिक्षण कार्य किया। इस लेख में इसी शिक्षण कार्य के दौरान हुए कुछ अनुभवों को प्रस्तुत किया गया है।

पहला दिन

कक्षा प्रक्रिया

कक्षा 7 पहली मंज़िल पर एक व्यवस्थित कमरे में बैठी थी। बच्चों के बैठने के लिए टेबल और स्टूल की व्यवस्था थी। कक्षा में नामांकित 18 बच्चों में से 16 उपस्थित थे। इन बच्चों में 7 लड़के और 9 लड़कियाँ शामिल थीं। पहला दिन होने के कारण और बच्चों को सहज करने के लिए आपसी परिचय किया गया। परिचय के बाद मैंने बच्चों से अपनी योजना साझा की। उन्हें बताया गया कि हम लोग अगले कुछ दिन *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन* विषय के पाठ 1 (समानता) पर कार्य करेंगे। सामान्य बातचीत के बाद मैंने बच्चों से पूछा, "इस पाठ में एक

कहानी है, जिसमें 'समानता' विषय पर दो महिलाएँ आपस में विमर्श करती हैं। यह कहानी किसी को याद है क्या?" हर्षा नाम की लड़की ने हाथ उठाकर बताया, "मुझे याद है।" मैंने कहा, "सभी को एक बार कहानी सुना दीजिए।" हर्षा ने कहानी सुनाने की बजाय उसके बारे में बहुत संक्षिप्त जानकारी कक्षा में साझा की। इससे मुझे यह पता चला कि ज़्यादातर बच्चों को कहानी याद नहीं है।

मैंने बच्चों को यह कहानी सुनाई। सभी बच्चे बहुत तल्लीनता से कहानी सुन रहे थे। कहानी पूरी होने के बाद मैंने बच्चों से एक-एक कर तीन सवाल पूछे। पहला सवाल था, "कहानी में समानता की बात की जा रही थी। समानता से आप लोग क्या समझते हैं?" चार बच्चों ने हाथ खड़े किए। मैंने एक बच्चे को बताने का मौक़ा दिया। उसने जवाब में कहा, "सभी को समान अधिकार हों, तब समानता होती है।" हर्षा ने कहा, "अधिकारों की कोई बात नहीं है। लोगों ने ख़ुद असमानता बनाई है।" मैंने कहा, "मुझे लगता है कि असमानता प्रकृति की देन है, जबकि आप कह रही हैं कि यह लोगों की देन है। देखिए, हममें से कोई लम्बा, कोई छोटा, कोई पतला, मोटा, गोरा, और कोई काला है। समानता कहाँ है?" ज़्यादातर बच्चे मेरे तर्क से सहमत होते नज़र आने लगे, सिवाय हर्षा के। हर्षा ने कहा, "जिसे आप प्राकृतिक असमानता कह रहे हैं, वह विविधता है। लेकिन इस विविधता के कारण जब कुछ लोग दूसरों के साथ असमान व्यवहार करने लगते हैं, तब असमानता बढ़ती है।" इस चर्चा से कई बच्चे एकदम कटे हुए दिखाई दिए, या ये कह सकते हैं कि इस चर्चा से मुद्दा और अस्पष्ट हो गया। मैंने आगे बढ़ते हुए कहा कि अभी हम इस मुद्दे को कुछ और सवालों के सन्दर्भ से समझने का प्रयास करेंगे।

इसके बाद मैंने दूसरा सवाल पूछा, "आपके विचार से समानता के बारे में शंका करने के लिए कहानी की पात्र कांता के पास क्या पर्याप्त कारण हैं?" इस बार मेहुल ने कहा, "सर, कहानी में आई कई घटनाएँ ऐसी हैं, जिनके आधार पर कांता के मन में समानता को लेकर शंका हुई।" कुछ और बच्चों ने भी शंका के इन कारणों से सहमति जताई।

तीसरे सवाल में, मैंने असमानता के लिए जल्दी से कोई तीन कारण बताने को कहा। सौगत ने कहा, "जब कांता अपनी बीमार बेटी को डॉक्टर के पास दिखाने गई, वहाँ अमीर लोग, बिना लाइन में लगे, सीधे ही डॉक्टर के पास चले गए जबकि ग़रीब लोग लाइन में लगे थे।" हर्षा ने बताया, "कांता की सहेली ने जब उनकी बस्ती में गन्दगी की ओर ध्यान दिलाया था।" असमानता का तीसरा कारण बच्चों ने कांता की मालकिन के व्यवहार को माना। बच्चों के साथ हुई चर्चा के मुख्य बिन्दुओं को मैंने ग्रीन बोर्ड पर अंकित किया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर उनका इस्तेमाल चर्चा में किया जा सके। मुख्य बिन्दु इस प्रकार थे :

- समानता-असमानता मन में होती है।
- अमीर-ग़रीब के बीच असमानता देखी जाती है।
- घरों में भी असमानता, ख़ासकर लड़के-लड़कियों के बीच, दिखाई देती है।

- सबको एक समान अधिकार हों, तब समानता होगी।
- लोगों ने ख़ुद ही असमानता बनाई है।
- जाति के कारण असमानता होती है और इसके कारण ही भेदभाव पैदा होते हैं।

दूसरी गतिविधि में, बच्चों को ख़ुद के कुछ ऐसे अनुभव सुनाने थे, जिनमें उन्होंने असमानता महसूस की हो। ज़्यादातर बच्चों ने स्कूल में महसूस होने वाली असमानता के उदाहरण प्रस्तुत किए। जैसे– स्कूल के प्रतिनिधि के तौर पर अकसर शिक्षक लड़कों को ही बाहर भेजते हैं, लड़कियों को नहीं; खेल खेलने के लिए लड़कों को खेल सामग्री दे दी जाती है, जबकि लड़कियों को कहा जाता है कि कमरे में बैठकर पढ़ाई करो, या फिर अगर कुछ खेलना ही है तो कमरे के अन्दर वाले खेल ही खेल लो; लड़के-लड़कियों को एक साथ खेलने से भी रोका जाता है; आदि।

जब सवाल किया गया कि स्कूल में समानता कहाँ-कहाँ दिखाई देती है; इसके निम्नलिखित जवाब आए :

- बिना किसी भेदभाव के कक्षा 8 तक के सभी बच्चों को सप्ताह में 2 दिन दूध पीने को दिया जाता है।
- प्रार्थना सभा में सभी बच्चे एक साथ बैठते हैं।
- सभी बच्चों के लिए एक जैसी यूनिफ़ॉर्म है।
- लड़के-लड़कियों को एक जैसी पढ़ाई करवाई जाती है।

अन्त में, गृहकार्य के लिए सभी बच्चों को उनके ख़ुद के या किसी दूसरे के साथ घटित हुई असमानता की ऐसी किसी घटना, या कहीं पर किसी घटना के सम्बन्ध में पढ़ा हो, उसे अपने शब्दों में लिखकर लाने को कहा गया।

दूसरा दिन

मैंने पिछले दिन किए कार्य को याद कराते हुए दिए गए गृहकार्य के बारे में पूछा, सब बच्चे एकदम चुप हो गए। पूछने पर गृहकार्य नहीं करके लाने के बारे में अलग-अलग कारण सुनने को मिले। अगले दिन सभी बच्चे गृहकार्य करके लाएँ, ये कहते हुए मैं आगे बढ़ गया।

आज पाठ्यपुस्तक से अंसारी दम्पति की कहानी को 4 उपसमूहों में पढ़ना था। साथ ही, सभी उपसमूहों को कहानी पर आपसी विमर्श करने के बाद तीन सामान्य सवालों के जवाब लिखने थे।

सवाल इस प्रकार थे :

1. यदि आप अंसारी परिवार के सदस्य होते, तो प्रॉपर्टी डीलर के नाम बदलने के सुझाव का उत्तर किस प्रकार देते?
2. क्या आपको अपने जीवन की कोई ऐसी घटना याद है, जब आपके मान-सम्मान या गरिमा को चोट पहुँची हो? और
3. आपको उस घटना के वक़्त कैसा महसूस हुआ था?

कमरे की बैठक व्यवस्था में थोड़ा परिवर्तन करते हुए 4-4 बच्चों के 4 उपसमूह बनाए गए। प्रत्येक उपसमूह ने कहानी को पढ़कर दिए गए सवालों के जवाब बड़े समूह में प्रस्तुत किए। उपसमूहवार सवालों के जवाब इस प्रकार आए :

उपसमूह 1

पहले सवाल का जवाब : "यदि हम अंसारी परिवार के सदस्य होते, तब प्रॉपर्टी डीलर के नाम बदलने के सुझाव पर उनसे पूछते कि यदि आपको मुस्लिम मोहल्ले में मकान किराए पर लेना होता, क्या आप अपना नाम अंसारी रखते? नहीं न! फिर हम अपना नाम क्यों बदलें? नाम हमारी पहचान है और हम अपनी पहचान नहीं बदलेंगे।"

दूसरे सवाल का जवाब : "हमारे घर में हमसे बड़े भाई-बहन से हमारी तुलना करके हमें कमतर बताया जाता है, जिससे हमें ठेस पहुँचती है।"

तीसरे सवाल का जवाब : "जब-जब ऐसा होता है, हमें बहुत बुरा महसूस होता है।"

उपसमूह 2

पहले सवाल का जवाब : "हम अपने नाम में परिवर्तन के लिए बिलकुल भी राज़ी नहीं होते, क्योंकि मकान किराए पर लेने के लिए बोला गया झूठ किसी-न-किसी दिन पकड़ा जाता ही!"

दूसरे सवाल का जवाब : समूह की एक छात्रा ने अपना निजी अनुभव बताते हुए कहा, "जब हमारा परिवार पहली बार जयपुर आया था, तब कई महीनों तक पिताजी को कोई काम नहीं मिल पाया। उस दौरान हमारी माँ के काम से ही घर चल रहा था। एक दिन घर पर आए हमारे एक रिश्तेदार ने जब पापा को औरत की कमाई खाने का ताना दिया, मेरी और मेरे पापा की गरिमा को बहुत चोट पहुँची। मैंने पापा से कहा कि ऐसे रिश्तेदार को फिर कभी अपने घर नहीं आने देना है।"

तीसरे सवाल का जवाब : "उस दिन की घटना से हम लोग कई दिनों तक असहज रहे, हमें अत्यधिक बुरा महसूस हुआ।"

उपसमूह 3

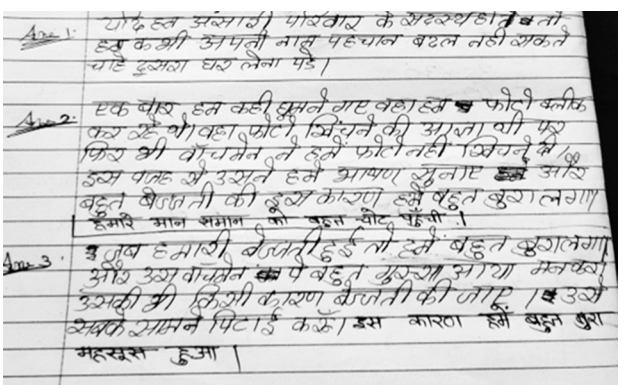

Ans 1: यदि हम अंसारी परिवार के सदस्य होते तो हम कभी अपनी नाम पहचान बदल नहीं सकते चाहे दूसरा घर लेना पड़े।

Ans 2: एक बार हम कहीं घूमने गए वहा हम फोटो क्लिक कर रहे थे वहा फोटो खिंचने की आज्ञा थी पर फिर भी वॉचमेन ने हमें फोटो नहीं खिचने दी। इस वजह से उसने हमें भाषण सुनाए और बहुत बेइज्जती की इस कारण हमें बहुत बुरा लगा। हमारे मान सम्मान को बहुत चोट पहुँची।

Ans 3: जब हमारी बेइज्जती हुई तो हमें बहुत बुरा लगा और उस वाचमेन पे बहुत गुस्सा आया मन करा उसकी भी किसी कारण बेइज्जती की जाए। उसे सबके सामने पिटाई करूँ। इस कारण हमें बहुत बुरा महसूस हुआ।

उपसमूह 4

पहले सवाल का जवाब : "नाम बदलने के सुझाव को नहीं मानते, और वैसे भी आजकल मकान मालिक किराएदार से उसकी फ़ोटो आईडी माँगते हैं।"

दूसरे सवाल का जवाब : "हमारे साथ घर में भी कई बार असमानता का व्यवहार होता है। जैसे– छोटे बच्चों को सभी पार्टियों में ले जाया जाता है, लेकिन हमें मना कर दिया जाता है। कभी हमें भी पार्टियों में लेकर जाना चाहिए।"

तीसरे सवाल का जवाब : "ऐसे मौक़े पर हमें बहुत बुरा लगता है।"

अन्त में, असमानता के दूसरे पहलुओं पर बात करते हुए मैंने इस बात पर बच्चों के साथ अपने विचार साझा किए कि समानता के सिद्धान्त का पालन करना क्यों ज़रूरी है। ये विचार इस प्रकार थे :

भारतीय संविधान सभी व्यक्तियों को समान मानता है। इसका अर्थ है कि देश के सभी व्यक्ति, चाहे वे पुरुष हों या स्त्री, किसी भी जाति, धर्म, शैक्षिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखते हों, समान माने जाएँगे।

समानता को स्थापित करने के लिए कुछ सिद्धान्त संविधान में दिए गए हैं। मसलन,

1. कानून की दृष्टि में हर व्यक्ति समान है।
2. किसी भी व्यक्ति के साथ उसके धर्म, जाति, वंश, जन्म स्थान और उसके स्त्री या पुरुष होने के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।
3. हर व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर जा सकता है।
4. अस्पृश्यता का उन्मूलन कर दिया गया है।

शासन ने संविधान द्वारा मान्य किए गए समानता के अधिकार को दो तरह से लागू किया है :

1. कानून के द्वारा; और

2. सरकार की योजनाओं व कार्यक्रमों द्वारा सुविधाविहीन समाज और लोगों की मदद करके।

तीसरा दिन

तीसरे दिन मेरे साथ उस विद्यालय में सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक भी थे। योजना के अनुसार, सबसे पहले बच्चों से गृहकार्य के बारे में जानकारी ली गई। सभी बच्चे गृहकार्य करके लाए थे। अच्छी बात यह रही कि बच्चे अपनी भाषा में लिखकर लाए।

इसके बाद मैंने जेंडर-आधारित भेदभाव वाला वीडियो बच्चों को दिखाया।

https://youtu.be/ltEBXbdIiVA (Tamanna || A Short Film on Gender Discrimination || 6 Mins – YouTube)

बच्चों ने वीडियो ध्यान से देखा। वीडियो दिखाने के बाद चर्चा के लिए सवाल था, "वीडियो में आई तमन्ना नाम की लड़की, लड़का क्यों बनना चाहती थी? या वो ऐसा क्यों कह रही होगी?" इस सवाल के जवाब के लिए मैंने कुछ बच्चों को रोका, ताकि मैं उन दूसरे बच्चों के विचार जान सकूँ जो अपनी बात रखने में झिझकते हैं। जैसे ही मैंने पूछा, "कौन-कौन बताएगा?" शेष बचे 14 बच्चों में से 8 ने हाथ खड़े किए। अच्छी बात यह लगी कि इन 8 बच्चों में 3 लड़कियाँ ऐसी थीं जो पिछले 2 दिनों में एक बार भी नहीं बोली थीं। मैंने उन तीनों लड़कियों के विचार लिए। तीनों ने अलग-अलग तरह के उदाहरणों से बताया कि घरों में लड़कियों के साथ असमान व्यवहार किया जाता है और लड़कों की बात ही मानी जाती है। जब मैंने पूछा, "समाज में लोग ऐसा क्यों करते हैं?" जवाब मिला, "लड़कियों को शादी के बाद दूसरे घर जाना होता है, जबकि लड़के घर में ही रहते हैं। इसीलिए लड़कियों को पराया धन भी कहते हैं।"

इसके बाद दो वीडियो और दिखाए गए। इन वीडियो में परिवार में जेंडर-आधारित https://youtu.be/EvwuRuTu8T8 और जाति-आधारित https://youtu.be/nCS7Rus4_–Y भेदभाव को दिखाया गया है। दोनों वीडियो बच्चों ने बहुत ध्यान से देखे। जब उनसे सवाल-जवाब किए गए, उन्होंने बहुत सटीक उदाहरणों के माध्यम से चर्चा में भाग लिया।

अन्त में सभी बच्चों को गृहकार्य के लिए निम्नलिखित सवाल दिए गए :

1. तमन्ना लड़का क्यों बनना चाहती थी? या वह ऐसा क्यों कह रही होगी?

2. विकास ने शान्ति को मारने की कोशिश क्यों की होगी?

3. क्या समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन देना चाहिए? यदि नहीं, तो क्यों? और

4. 'समानता' पाठ को पढ़िए और समझिए। साथ ही प्रत्येक बच्चा समानता से जुड़े कम-से-कम 3 सवाल बनाएगा।

चौथा दिन

मैंने बच्चों से गृहकार्य के बारे में पूछा। 9 बच्चों ने कहा, "सर, हमने गृहकार्य कर लिया है।" शेष 7 बच्चों ने कहा, "सर, गृहकार्य तो कर लिया था, मगर आज स्कूल में नो बैग डे होने की वजह से बैग नहीं लाए।" मैंने कहा, "जो बच्चे आज बैग नहीं लाए हैं, उनका काम कल देख लेंगे। जो आज बैग लाए हैं, उन बच्चों को सभी के सामने अपने उत्तर पढ़कर सुनाने हैं।"

पहले सवाल, तमन्ना लड़का क्यों बनना चाहती थी? या वह ऐसा क्यों कह रही होगी?, के जवाब मुख्य रूप से इस प्रकार आए :

- तमन्ना लड़का इसलिए बनना चाहती थी, ताकि उसके मम्मी-पापा उसको ज़्यादा चाहने लगें।
- घर में भाई और उसके बीच असमानता का व्यवहार किया जा रहा था। भाई के साथ अच्छा और उसके साथ ख़राब, इसलिए वह लड़का बनना चाहती थी।
- तमन्ना लड़का इसलिए बनना चाहती थी, क्योंकि आज के ज़माने में लड़के-लड़कियों के बीच भेदभाव किया जाता है।
- तमन्ना के भाई को घर में सभी ज़्यादा प्यार करते थे, जबकि उसको नहीं। इसलिए वो भी लड़का बनकर सबका प्यार हासिल करना चाहती थी।

इसी तरह से दूसरे सवाल के जवाब भी बच्चों की तरफ़ से मिले। लेकिन तीसरे और चौथे सवाल के जवाब बहुत कम बच्चे लिख पाए। इसलिए उनपर बच्चों के साथ कई उदाहरणों के माध्यम से चर्चा करके समझ बनाने का काम किया गया। इसका अभ्यास करवाने की दृष्टि से उपस्थित बच्चों के चार उपसमूह बनाए गए। प्रत्येक उपसमूह को समानता वाला पाठ पढ़कर उसकी विषयवस्तु से 8-8 सवाल बनाने को कहा गया। इसके बाद योजनानुसार प्रत्येक उपसमूह के सवालों को बड़े समूह में प्रस्तुत करवाया गया और उन्हें बोर्ड पर लिखा गया। उदाहरण के तौर पर, सवाल नीचे दिए गए हैं :

उपसमूह 1

- अंसारी परिवार को मकान किराए पर नहीं देने का मकान मालिक ने क्या बहाना बनाया?
- विकास ने अपनी बहन शान्ति को मारने का विचार क्यों बनाया?
- कांता को क्यों लगा कि क़तार में सभी समान हैं?
- कांता को एडवांस पैसा माँगने की ज़रूरत क्यों पड़ी होगी?
- शाम होते-होते कांता के मन में समानता को लेकर क्या शंकाएँ पैदा हुईं?
- कांता बीमार बेटी को पहले डॉक्टर के पास ले जाने की बजाय काम पर क्यों गई होगी?

उपसमूह 2

- हमारे भारत देश में सभी लोगों को समान माना जाता है, लेकिन क्यों?
- हमारे देश में लोकतंत्र होने के बावजूद भी जाति, धर्म, वंश, जन्म स्थान, आदि के आधार पर भेदभाव क्यों किया जाता है?
- कांता को ऐसा क्यों लगा कि देश में समानता नहीं है?
- अफ़्रीकी-अमरीकनों के साथ असमानता को लेकर एक विशाल आन्दोलन क्यों हुआ? उसका नाम क्या था?

- लोकतंत्र क्या है? समझाइए।
- समाज में लड़कों को लड़कियों से अधिक महत्त्व क्यों दिया जाता है?
- हमारे देश के अन्दर लड़कियों को कम क्यों पढ़ाया जाता है?
- हमारे देश में अमीरों को ग़रीबों से अधिक मान-सम्मान क्यों मिलता है?
- असमानता को किन्हीं दो उदाहरणों से बताएँ।

उपसमूह 3

- कांता को क्यों लगा कि सभी व्यक्ति समान हैं?
- विकास ने अपनी बहन शान्ति को क्यों मारा?
- तमन्ना ने अपने पेपर में लड़का बनने की बात क्यों लिखी?
- अंसारी परिवार ने अपना नाम क्यों नहीं बदला?
- स्कूल में राजपूत बच्चों की प्लेटें रसोई में क्यों रखवाई जाती थीं?
- समानता और असमानता में क्या अन्तर है?
- कांता को बेटी के बीमार होने पर भी काम करने क्यों जाना पड़ा?
- मकान मालकिन ने मकान ख़ाली होने पर भी अंसारी परिवार को मकान किराए पर क्यों नहीं दिया?

उपसमूह 4

- कांता को शंका क्यों हुई कि सब समान नहीं हैं?
- मुसलमान को किराए पर घर नहीं देने की क्या वजह रही होगी?
- विकास ने अपनी बहन शान्ति को मारने की कोशिश क्यों की होगी?
- स्कूल में नीची जाति और राजपूत बच्चों की थालियों को अलग-अलग रखने की व्यवस्था क्यों की गई होगी?
- कांता की बेटी की तबीयत क्यों ख़राब हुई होगी?
- कांता के घर के आसपास की तुलना में, वह जहाँ काम करने जाती थीं वहाँ साफ़-सफ़ाई अधिक थी। ये भेदभाव क्यों किया गया?

उक्त गतिविधि से मुझे समझ आया

जब स्कूलों में बच्चों की गृहकार्य की कॉपी देखते हैं या कभी किसी टेस्ट के सवालों पर नज़र जाती है, अधिकतर सवाल सूचनाओं पर आधारित दिखाई देते हैं। बच्चों से अगर कभी सवाल पूछने के लिए कहा जाता है, तब वे भी अधिकतर सूचना-आधारित सवाल ही शिक्षक से पूछते हैं। लेकिन इस कक्षा में बहुत-से ऐसे सवाल बच्चों से किए गए थे, जिनमें उनके लिए सोचने-समझने के अवसर ज़्यादा थे, और बच्चे उनके जवाब भी दे पा रहे थे। मैंने सवाल बनाने के काम में बच्चों को काफ़ी मशक़्क़त करते हुए देखा। कुछ बच्चों का कहना था कि सवाल शिक्षक बनाते हैं, बच्चों को सिर्फ़ उनके उत्तर ही देने होते हैं। इसलिए हमको सवाल बनाने में काफ़ी दिक़्क़त हो रही है। मैंने बच्चों से कहा कि आप लोग पाठ की विषयवस्तु को ध्यान से पढ़िए और उसको पढ़ते हुए मन में जो भी सवाल आएँ, उनपर आपस में चर्चा कीजिए। चर्चा के बाद भी यदि सवाल मन में बने रहते हैं, उन्हें लिखने का प्रयास करें। इससे आप सभी को पाठ की विषयवस्तु एवं प्रश्नों की प्रकृति समझने में मदद मिलेगी।

हालाँकि, बच्चों ने जो सवाल बनाए, वो रोज़ाना के सवालों से थोड़े अलग नज़र आए। यद्यपि, चारों उपसमूहों के अधिकतर सवाल क्या

और क्यों वाले नज़र आए, लेकिन कुछ सवाल गहरे विश्लेषण की माँग करते भी दिखे। बच्चों ने कुछ ऐसे सवाल भी बनाए जिनके उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं। यानी, सवालों को खुला छोड़ा गया। बच्चों के बनाए हुए सवालों में अभी भी एप्लीकेशन वाला कोई सवाल नज़र नहीं आया। मुझे लगता है कि इसके लिए कक्षा में दो स्तरों पर काम करने की ज़रूरत होगी। पहला, शिक्षकों को गृहकार्य और टेस्ट पेपर में बच्चों से अलग-अलग तरह के सवाल पूछने होंगे; और दूसरे स्तर पर बच्चों से हर पाठ की विषयवस्तु से सवाल बनवाने का अभ्यास करवाना होगा।

पाँचवाँ दिन

पुनरावृत्ति

बीते 4 दिनों, कक्षा में जो कुछ बातचीत हुई, उसपर बच्चों से संक्षेप में मुख्य बातों को सुना गया। बच्चों ने कांता और सुजाता की कहानी पर आधारित बातचीत को अच्छे-से रखा, लेकिन वे अंसारी दम्पति की वास्तविक समस्या को पकड़ने में असफल रहे। ऐसे में, मुझे यह महसूस हुआ कि इस मुद्दे पर बात कुछ अनसुलझी-सी रह गई है। अंसारी दम्पति के मुद्दे पर संक्षेप में एक बार फिर से बातचीत की गई।

इसके बाद फ़ौरी तौर पर बच्चों से निम्नलिखित सवालों के माध्यम से चर्चा की गई :

1. कांता ने हॉस्पिटल में ऐसा क्या देखा जिससे वह हैरान हो गई?
2. लोगों ने लोकतांत्रिक सरकार चुनना क्यों पसन्द किया?
3. क्या आज भी दलितों के साथ भेदभाव होता है?
4. जाति महत्त्वपूर्ण होती है या नहीं? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।
5. मानवीय गरिमा से आप क्या समझते हो? ओम प्रकाश वाल्मीकि और अंसारी दम्पति के साथ ऐसा क्या हुआ कि उनकी गरिमा को ठेस पहुँची?
6. यदि आप ओम प्रकाश वाल्मीकि और अंसारी दम्पति की जगह होते, आप क्या करते?

उक्त सवालों की चर्चा में सामने आया कि बच्चे जाति वाले सवाल पर एकदम उलझे हुए हैं। ज़्यादातर बच्चे जाति को महत्त्वपूर्ण मानते

समता एवं समानता के भेद पर आधारित वीडियो देखते बच्चे।

हैं। जब उनसे पूछा गया, यह क्यों महत्त्वपूर्ण है? इसके जवाब में ज़्यादातर बच्चे बोले कि शादी के लिए जाति का पता होना ज़रूरी है।

एक बच्चे ने कहा, "मैंने कुछ लोगों से सुना है कि ईश्वर केवल इंसान पैदा करता है, जाति नहीं बनाता।"

मैंने पूछा, "फिर जाति कौन बनाता है?"

उसने जवाब दिया, "जाति इंसानों की देन है।"

मैंने फिर पूछा, "यदि यह इंसानों की देन है फिर शादी के लिए जाति का पता होना क्यों ज़रूरी होना चाहिए?"

इस बार इन बच्चों ने कहा, "सर, एक जैसे काम करने वाले लोग एक साथ ठीक से रह पाते हैं, इसलिए शादी अपनी जाति में ही करते हैं।"

मैंने कहा, "ये सही बात है कि ज़्यादातर लोग शादी-ब्याह अपनी जाति में ही करते हुए दिखाई देते हैं। लेकिन मैं ऐसे बहुत-से लोगों को जानता हूँ जिन्होंने दूसरी जाति में शादी की है।"

अकसर कक्षा में चुप रहने वाली एक लड़की बोली, "सर, वो सब पढ़े-लिखे और पैसे वाले लोग होंगे।"

मैंने पूछा, "इसका मतलब है, यदि लोग पैसा अधिक कमाने लगें, तब उनके लिए जाति महत्त्वपूर्ण नहीं होती?"

बीच में ही राहुल बोल पड़ा, "शाहरुख ख़ान की पत्नी गौरी हिन्दू है। इन्होंने जाति तो छोड़ो, धर्म की भी परवाह नहीं की।"

समय को ध्यान में रखते हुए यहाँ मैंने जाति के उद्भव पर संक्षिप्त बात रखी। मैंने बच्चों को बताया कि कैसे खेती की शुरुआत और लोगों के स्थाई निवास से नए-नए काम उभरे, और फिर उन अलग-अलग कामगार समूहों की पहचान उनके काम से होने लगी। यह पहचान कालान्तर में जाति के रूप में हमारे सामने आई। जो पहचान कभी कर्म-आधारित थी, वह धीरे-धीरे जन्म-आधारित हो गई। इसकी वजह से आज हमारे समाज में कई तरह के भेदभाव होते हैं। हालाँकि, लोकतांत्रिक समाज ने अपने लिए आधुनिक मूल्य चुने और अपने संविधान में उनको महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। इन मूल्यों के उपयोग से आज हम एक समता-आधारित समाज बनाने की तरफ़ क़दम बढ़ा पा रहे हैं। आज के समय में कई तरह के जातीय बन्धन टूटने लगे हैं।

इसके बाद मैंने कहा कि अब हम समता और समानता पर अपनी समझ बनाने का काम करेंगे। आइए, इसके लिए हम दो छोटे-छोटे वीडियो देखते हैं।

https://youtu.be/nCS7Rus4_–Y

https://youtu.be/F9CLFiPnOd8 – A Short Video 'The Divide' Social Experiment.

वीडियो के अन्त में सभी बच्चों के साथ निम्नलिखित चर्चा की गई :

1. दोनों वीडियो देखने से बच्चों को जो कुछ समझ आया, उसको सभी से साझा किया गया।
2. समता और समानता के बीच के अन्तर पर उदाहरणों के माध्यम से बात की गई।
3. आरक्षण का क्या महत्त्व है? यह होना चाहिए या नहीं? इसपर भी बच्चों के विचार लिए गए।

इस पाँच-दिवसीय शिक्षण अभ्यास के निष्कर्ष

1. शिक्षण योजना बनाकर शिक्षण करने से शिक्षण का फ़्लो सही रहता है। पहले और दूसरे दिन के काम को एक दिन में भी करवाया जा सकता है।
2. पाठ के शिक्षण में लोकतंत्र पर अपेक्षाकृत कम बात हुई। हालाँकि,

समता और समानता जैसे मुद्दे पर काम करने के लिए लोकतंत्र की समझ पर यदि ठीक से बात हो गई होती, तब शायद बच्चों को समता और समानता की अवधारणा पर और बेहतर एवं स्पष्ट समझ बनाने में मदद मिलती।

3. संवैधानिक मूल्यों और दैनिक जीवन के व्यवहार में बच्चों को कोई तालमेल नज़र नहीं आता। ऐसे में शिक्षक के सामने बड़ी चुनौती यह समझा पाना होती है कि हम सब बराबर हैं।

4. भारतीय समाज में जातियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। यह एक सच्चाई है। जाति आम आदमी की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को सीधे-सीधे प्रभावित करती नज़र आती है, फिर चाहे मसला बच्चों की शादी-ब्याह का हो, या खान-पान, या वोट की राजनीति का हो। ऐसे में, जाति के उद्भव और उसके सामाजिक प्रभावों पर यदि ठीक से समझ बनाई जाए, तभी शायद बच्चे आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों को आत्मसात् कर सकते हैं। नहीं तो सामाजिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों के बीच बच्चों को विरोधाभास ही नज़र आता रहेगा।

5. शिक्षण योजना में शामिल की गईं सभी वीडियो क्लिप बच्चों को समता एवं समानता जैसे मुद्दों को ठीक से समझाने में मददगार साबित हुईं।

सभी चित्र : महमूद ख़ान

महमूद ख़ान पिछले दो दशक से शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन एवं प्रशिक्षण कार्य में सक्रिय रहे हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जयपुर में बतौर सामाजिक विज्ञान रिसोर्स पर्सन कार्यरत हैं।

सम्पर्क : mahmood.khan@azimpremjifoundation.org